तीर्थमण्डल-विधान पूजा

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ़-३६४२५०

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

भगवानश्रीकुन्दकुन्द-कहानजैनशास्त्रमाला, पुष्प–२०४

श्री

तीर्थमण्डल-विधान पूजा

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर ट्रस्ट

सोनगढ़–३६४ २५०

मूल्य : रु. १०=००

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रथम संस्करण : १५०० प्रति
वीर नि. सं. २५३० * वि. सं. २०६० * ई. स. २००४

द्वितीय संस्करण : ३००० प्रति
वीर नि. सं. २५३० * वि. सं. २०६० * ई. स. २००४

तृतीय संस्करण (गुजराती लिपि) : २००० प्रति
वीर नि. सं. २५३० * वि. सं. २०६० * ई. स. २००४

चतुर्थ संस्करण : २००० प्रति
वीर नि. सं. २५३२ * वि. सं. २०६२ * ई. स. २००६

तीर्थमण्डल-विधान-पूजाके
स्थायी प्रकाशन-पुरस्कर्ता
स्व. मंजुलाबेन शांतिलाल मोदीके स्मरणार्थ
श्रीमती लाभकुंवर चिमनलाल मोदी
हस्ते हीना, विजय तथा चेतना महेन्द्रकुमार महेता

मुद्रक :
कहान मुद्रणालय
जैन विद्यार्थी गृह कम्पाउण्ड, सोनगढ़–३६४ २५०
✆ : (02846) 244081

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

પરમ પૂજ્ય અધ્યાત્મમૂર્તિ સદ્‌ગુરુદેવ શ્રી કાનજીસ્વામી

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

प्रकाशकीय निवेदन

अध्यात्मयुगस्रष्टा स्वात्मानुभवी सत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीने 'तीर्थंकरभगवंतों द्वारा प्रकाशित दिगम्बर जैन धर्म ही सनातन सत्य है' यह युक्ति-न्यायसे सर्वप्रकार स्पष्टरूपसे समझाया है; मार्गकी खूब छानबीन की है। द्रव्यकी स्वतन्त्रता, द्रव्य-गुण-पर्याय, उपादान-निमित्त, निश्चय-व्यवहार, आत्माका शुद्ध स्वरूप, सम्यग्दर्शन, स्वानुभूति, मोक्षमार्ग इत्यादि सब कुछ उनके परम प्रतापसे इस काल सत्यरूपसे बाहर आया है। इन अध्यात्मतत्त्वोंके—गहन तथ्योंके—रहस्योद्घाटनके साथ साथ उन्होंने वीतराग देव-शास्त्र-गुरुकी सही पहिचान कराकर मुमुक्षुसमाज पर अनन्त उपकार किया है। उन्हींके सत्प्रतापसे ही मुमुक्षुसमाजमें जिनेन्द्रपूजा-भक्ति आदिकी सत्य प्रवृत्ति साभिरुचि, सोल्लास एवं नियमित चल रही है। वे स्वयं भी जिनेन्द्रभक्तिमें नियमितरूपसे उपस्थित रहते थे। उनके ही पुनीत प्रभावसे सौराष्ट्रप्रदेश दिगम्बर शुद्धाम्नायी जिनमन्दिरों एवं वीतराग दिगम्बर जिनबिम्बोंसे विभूषित हो गया है।

पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामीने ससंघ शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी, पावापुरी, चंपापुरी, राजगृही आदि अनेकानेक तीर्थोंकी यात्रा की थी। उसीके परिपेक्ष्यमें इस 'तीर्थमंडल विधान पूजा'में तीर्थोंकी पूजा संकलित की गई है।

पूज्य गुरुदेवश्रीने सम्मेदशिखरजीकी यात्राके समय बहुत ही प्रमोद व्यक्त करते हुए कहा था : आज यह महा मंगल अवसर है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव—सभी मंगल है।

✻ अल्पकालमें मुक्त होनेवाला आत्मद्रव्य है, वह द्रव्य मंगल है।

✻ यहाँसे अनंत जीव सिद्ध हुए हैं, इसलिये सम्मेदशिखरकी भूमि क्षेत्र-मंगल है।

✻ आज श्री चंद्रप्रभ भगवानके निर्वाणका दिन है, इसलिये आजका दिन काल-मंगल है।

✻ रत्नत्रयरूप तीर्थकी भावनासे भीगा हुआ आजका भाव, भावमंगल है। इसलिये हमारे लिये सभी मंगल है।

अध्यात्मसाधनाकी पवित्र तीर्थभूमि सुवर्णपुरी (सोनगढ़)में, परम पूज्य गुरुदेव

श्री कानजीस्वामीके भक्तरत्न स्वानुभवविभूषित धन्यावतार प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री चम्पाबेनकी जिनेन्द्रभक्तिभावभीनी प्रशस्त प्रेरणासे प्रसंगोपात अनेकविध मण्डलविधान पूजाएं होती रहतीं हैं। और इसके सन्दर्भमें ट्रस्टकी ओरसे अनेक मण्डलविधानकी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। उसी श्रेणीमें 'श्री तीर्थमण्डल-विधानपूजा' सुवर्णपुरीमें पूज्य बहिनश्री चंपाबहिनकी ६३वे वार्षिक मंगलमय जन्ममहोत्सवके शुभ अवसर पर इस पुस्तकका चतुर्थ संस्करण प्रकाशित करते हुए प्रसन्नता अनुभूत हो रही है।

यह 'श्री तीर्थमण्डल-विधानपूजा', मुख्यतः कविवर पण्डित श्री टेकचन्द्रजी द्वारा रचित 'तीन लोक पूजा'से संगृहित संक्षिप्त संकलन है।

आशा है कि इस 'श्री तीर्थमण्डल-विधानपूजा'के संक्षिप्त संकलनके प्रकाशनसे मुमुक्षुसमाज अवश्य लाभान्वित होगा।

साहित्यप्रकाशनसमिति
श्री दि. जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट,
सोनगढ-३६४२५०

वि. सं. २०६२,
'पू. बहिनश्रीकी ६३वीं जन्मजयंती'

❁

अनुक्रमणिका

श्री समुच्चय पूजा 6
श्री कैलास सिद्धक्षेत्र पूजा 12
श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पूजा 15
श्री चंपापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा 24
श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र पूजा 27
श्री पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा 33
श्री गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पूजा 37
श्री गोम्मटस्वामी तीर्थक्षेत्र पूजा 40
श्री पोन्नुर तीर्थक्षेत्र पूजा 42
श्री सुवर्णपुरी तीर्थक्षेत्र पूजा 46
श्री धातकीविदेह भाविजिन पूजा 49
अर्घावली, आरती, शांतिपाठ 54-64

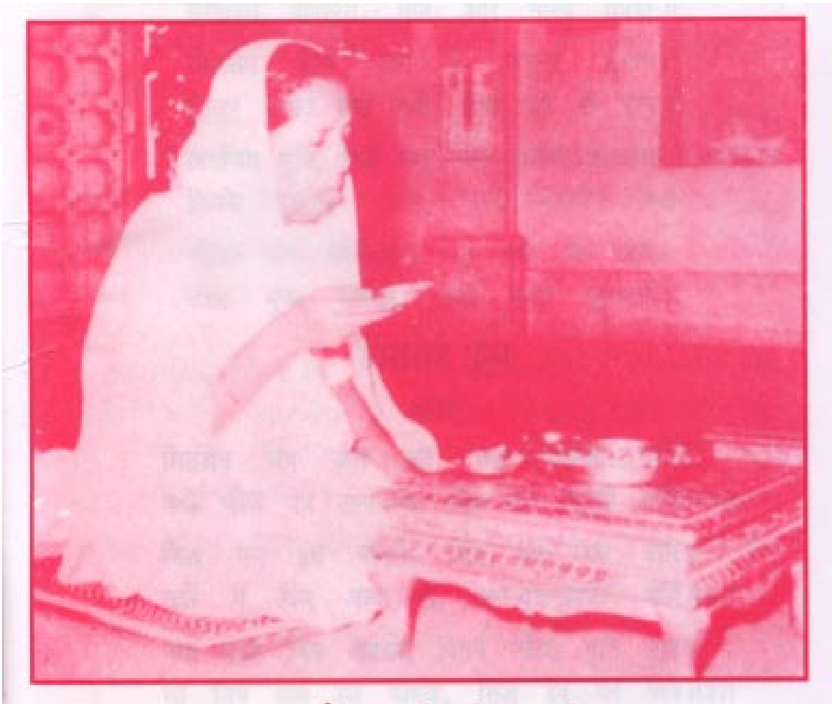

प्रशममूर्ति पूज्य बहेनश्री चंपाबहिन

तीर्थमंडल विधान पूजा प्रारंभ

तीर्थ वन्दना

कैलाशगिरि सम्मेदगिरि, गिरनार गिरि वन्दूं सदा।
चम्पापुरी पावापुरी, पुनि और तीरथ सर्वदा ।।

सिद्धक्षेत्र तीर्थ परम है उत्कृष्ट सुथान।
शिखर सम्मेद सदा नमो, होय पाप की हान।।

अगणित मुनि जँहसे गए, लोक शिखर के तीर।
तिनके पदपंकज नमो, नाशे भवकी पीर।।

श्रीमत वीर जिनेन्द्रको, बार बार शिर नाय।
संग्रह पूजा पाठको, करूं स्वपर सुखदाय।।

सिद्धक्षेत्र पूजा

(दोहा)

सिद्धक्षेत्र जग ऊंच थल, कहे जगतके मांहि।
नमों शीश कर लाय के, फिर जग फिरनो नांहि।।१।।

सिद्ध भए इन थानतें, जीव घने अघ छोरि।
तातैं मैं शिर नाय हों, मन-वच-तनको मोरि।।२।।

नमों सिद्ध जिन क्षेत्रको, विनय सहित थुति लाय।
सो जिय अघ रज धोयके, सिद्ध देव पद पाय।।३।।

मिटे पाप सुमिरन किए, जजे होय शिव वीर।
तातैं बहु थुति ठानके, जजैं क्षेत्र सिद्ध तीर।।४।।

जो पहुंचनकी शक्ति है सो पहुंचे तहँ जाय।
दीन शक्ति पहुंचे नहीं, मैं यहां भावन भाय।।५।।

इति पुष्पांजलिं० ।

समुच्चय पूजा

स्थापना

छन्द अडिल्ल

भरत क्षेत्रके बीच सिद्ध खेतर जिते, शुक्ल ध्यान कर मुनिवर निज कर्म हते।
सो खेतर इस जगह थापि मन लायके, कर आह्वानन पूजों मन वच काय से ।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्र अत्रावतरावतर संवौषट्, आह्वाननम् । ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निधौ सन्निधिकरणम् ।

चाल-मुनयानन्द (छन्द लक्ष्मीवती)

नीर निर्मल घनो लाय गंगा तनो, कनक झारी विषै भक्ति भावन घनो।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि हों जन्म जर रोग नाशन कही ।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यः जलं ।।१।।

चंदन घसि बावनो नीर निरमल थकी, घालि शुभ पात्र मन-वचनतैं थुति थकी।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि हों ताप भव रोग नाशन कही।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यः चन्दनं० ।।२।।

ऊजले खंड बिन जान अक्षत महा, आपने हाथ ले भक्ति करना चहा।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि पद होय फल अखय जिन धुनि कही ।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यः अक्षतं ।।३।।

पुष्प सुरवृक्षके लाय निज हाथजी, गंध बहु वर्ण शुभ रंग तिस माथजी।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि फलं कामका नाश हो धुनि कही ।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो पुष्पं ।।४।।

धृत मिष्टान रसपूर तुरतै किया, घालि शुभ पात्रमें हाथ अपने लिया।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि फल भूख नाशै सकल इम कही ।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं ।।५।।

सकल दीपन विषै दीप मणिमय भलो, कनक थाल धर कर आपने ले चलो।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि फल नाश ह्वै मोह तमकी मही ।।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो दीपं ।।६।।

धूप दश विधि महा गंध दायक लई, अगनिमें खेय मुखतें भली थुति ठई।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि फल कर्म दाहै लहै शिवमही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो धूपं ।।७।।

दाख पिसता सिरीफल भले जानिये, लोंग खारक इनै आदि फल आनिये।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि फल मोक्ष हो यह जिन धुनि कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो फलं ।।८।।

नीर चन्दन अछत पुष्प चरु जोइये, दीप धूप फल तथा अर्घ संजोइये।
भरत क्षेतर विषै सिद्ध थानक सही, पूजि फल नाश है पाप मल इम कही ॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं ।।९।।

छंद हरिगीतिका

जिन थानतें वसु कर्म जारी, मोक्ष को प्रापति भये।
सो थान ही बहु पुण्य दायक, सेवतें सब सुख लये।
इमि जानि मन वच काय शुध कर, पूजि हैं मन लायजी।
ता फलैं अविचल वास पावै, पुण्य को वरनायजी॥

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि सिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घ्यं ।।१०।।

प्रत्येक अर्घ

छंद-जोगीरासा

अष्टापद गिरि तीरथ गायो, पाप हरनको थानो।
यातैं आदि जिनेश आदि दे, शिव पाई ध्रुव थानो।
काल अनन्त रहें थिर थानक, फेर जनम नहिं होई।
ऐसे लख सिद्धक्षेत्र जानके अर्घ जजों मद खोई॥

ॐ ह्रीं कैलाशगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं ।।१।।

वासुपूज्य जिन द्वादशमां है, जगत तात हितकारी।
चम्पापुरतैं गये शिवालय, सो क्षेतर अवधारी।

अष्ट दरबतैं पूजों सो थल, तीरथ अघहर भाई।
ता फल भव भरमण मिट जावै, और जु वांछा नाहीं।।

ॐ ह्रीं चम्पापुरी-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं।।२।।

उर्जयन्त शिखर मनमोहन, तीरथ परगट भाई।
कोटि बहत्तरि सात सैकड़ा, यहांतैं शिवथल पाई।
नेमि जिनेश वरी शिवनारी, याहीके शिर जानो।
ऐसा थान लख्यो सब सुखदा, तहतें अर्घ चढानो।।

ॐ ह्रीं ऊर्जयन्तशिखरे नेमिनाथादि द्विसप्तति कोटि सप्तशत मुनयः मुक्तिगताः तज्जिनेभ्यो अर्घ्यं।।३।।

पावापुर सिध थानक तीरथ, पाप हरनको थानो।
महावीर तहं ही शिव पाई करम तनो कर हानो।
लाड नरेन्द्र जु आदि मुनीश्वर, पांच कोटि मुनिराई।
छांड सकल अघ मुक्ति वरी है, तिन थल अर्घ जजाई।।

ॐ ह्रीं पावापुरसिद्धक्षेत्रे लाड नरेन्द्रादि पंचकोटि मुनयः मुक्तिगताः तज्जिनेभ्यो अर्घ्यं।।४।।

शिखर सम्मेद थकी शिव परनी, बीस जिनेश्वर जानो।
तीरथ निरमल है सिध थानक, पूजनीक मगमानो।
तातैं पूजौं बहु सुख उपजै, पाप डरै दुख दाई।
तातै ऐसे थान जानके, अर्घ जजों सुख पाई।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम्।।५।।

नगर तारवर है सिध खेतर, पूजनीक शुभ थानो।
आठ कोडि मुनि मुक्ति गये हैं, सिद्ध भये जग जानो।
पूजै अति सुख होय तासको, त्रय जगको सुखकारी।
तातै मैं भी मन वच तन कर, पूजों मन वच धारी।।

ॐ ह्रीं तारवर नाम नगरसिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं।।६।।

(छन्द गीतिका)

क्षेत्र शत्रुंजय मनोहर, पुण्यक्षेत्र बखानिये।
तीन पांडव मुक्ति पाई, और सुन मन आनिये।
आठ कोडि मुनीन्द्र अघहरि, सिद्धथल वासो कियो।
वसु द्रव्यतैं तिस थानको, मम पूजनेको मन भयो॥

ॐ ह्रीं शत्रुञ्जय-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥७॥

(चौपाई)

श्री गजपंथ शिखर विख्यात, इहां तैं आठ कोडि मुनि भ्रात।
मोक्ष गये हैं भवि सिध थला, याको पूजै सब अघ टला॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥८॥

गव-गवाक्ष नील-महानील, राम हनू सुग्रीव सुढील।
कोडि निनाणवे तुंगी गिरा, मुनि शिव गये जजों थल खरा॥

ॐ ह्रीं तुंगीगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥९॥

साडे पांच कोडि मुनिराय, नंग अनंग आदि ऋषिराय।
सोनागिरि तैं शिव तिय वरी, सिद्धक्षेत्र लख पूजन करी॥

ॐ ह्रीं सोनागिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥१०॥

रावणके सुत आदि मुनिंद, साडे पांच कोडि गुणवृन्द।
मुक्ति गए रेवा तट सार, सो थल जजों अर्घ कर धार॥

ॐ ह्रीं रेवानदीतट-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥११॥

रेवा नदी सिद्धवर कूट, दो चक्री दश काम जु छूट।
साडे तीन कोडि मुनिराय, मोक्ष गये पूजों थल भाय॥

ॐ ह्रीं रेवानदी सिद्धवरकूट-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥१२॥

बडवा नगरी दक्षिण दिशा, चूलगिरी नामा गिरि लसा।
कुंभकर्ण आदिक शिव गए, तातैं थल पूजो थुति चये॥

ॐ ह्रीं बडवानगरी-दक्षिणदिशायां चूलगिरि-नामपर्वत-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं॥१३॥

चेलना नदी तीरके पास, मुक्ति गये बन्दों गुण रास।
तिन पूजे भवि जो फल लयो, ते फल पूज चहों फल भयो ।।

ॐ ह्रीं चेलनानदी-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् ।।१४।।

फलहोडीपुर पश्चिम दिशा, द्रोणागिरी तुंग गुण पसा।
सो है सिद्धक्षेत्र सुखकार, ताको अर्घ जजों हित धार ।।

ॐ ह्रीं फलहोडीपुर-पश्चिमदिशायां द्रोणगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं।।१५।।

अचलापुरकी दिशा ईशान, तहां मेढगिरि नाम प्रधान।
सिद्धक्षेत्र है पर्वत सही, तातै जजों अर्घ या मही ।।

ॐ ह्रीं अचलापुर्या ईशानदिशायां मेढगिरि-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं।।१६।।

वंशस्थल वन पश्चिम सोय, कुंथ नाम पर्वत है जोय।
सोही सिद्धक्षेत्र मन लाय, जिनको अर्घ जजों श्रुति गाय ।।

ॐ ह्रीं वंशस्थल-वनस्य पश्चिमदिशायां कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।१७।।

कोडिशिलातें कोडि मुनिन्द, मुक्ति गये तातैं गुणवृन्द।
ऐसे सिद्धक्षेत्र अवलोय, अर्घ जजों मन वच तन होय ।।

ॐ ह्रीं कोडिशिला-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं।।१८।।

छन्द अडिल्ल--

इत्यादिक सिद्धक्षेत्र कहे मन लायजी,
और कहे जिनवाणी मां सुखदायजी।
ते थल सुखदा जानि आनि वसु द्रव सही,
मन वच तन शुभ ठानि जजों सिधथल मही।

ॐ ह्रीं भरतक्षेत्रसम्बन्धि-सिद्धक्षेत्रेभ्यः पूर्णार्घ्यम्।।१९।।

जयमाला

दोहा-- सिद्ध क्षेत्रके नाम कुछ, कहूँ भक्ति मन लाय।
ताको सुनि मंगल लहै, अद्भुत फलको पाय ।।१।।

[11]

(छन्द-बेसरी)

गिरि कैलाश चतुरदिशि सरिता, है सिधक्षेत्र काम शुभ करता ।
इहांतैं मुक्ति बहुतने पाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।२।।

चंपापुर तीरथको थानो, ताहि जजे हो शिवपुर थानो ।
इहांतैं बहु मुनिने शिव पाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।३।।

शिखर समेद पापमल धोवै, जाको जो जीव दरशन जोवै ।
नगर तारवरतैं शिव जाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।४।।

है गिरनार शिखर सिध थानो, इहांतैं भये जीव सिध मानो ।
पावांपुरतै अति शिव जाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।५।।

श्री शत्रुंजय शिखर सुजानो, सिद्धक्षेत्र त्रयजग थुति ठानो ।
श्री गजपंथ शिखर थल थाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।६।।

तुंगीगिर भी शिखर उतुंगा, है सिध क्षेतर अति ही चंगा ।
सोनागिरि सिध क्षेतर थाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।७।।

रेवा नदी तीरथ जानो, तीरथ शुभ फलको दानो ।
नदी चेलना सिध थल थाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।८।।

रेवानदी सिद्धवरकूटा, इस थल बहु जियके अघ छूटा ।
ये सिधक्षेत्र अति सुखदाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।९।।

बडवानगर दक्षिण दिश जानो, चूलगिरि पर्वत शुभ मानो ।
तहंतैं शिव बहुतनने पाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।१०।।

फलहोडी पश्चिमदिश जानो, द्रोणागिरि पर्वत शुभ मानो ।
तहँतैं भी शिव बहुते पाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।११।।

अचलापुरकी दिश ईशानो, मेढ नाम पर्वत इक जानो ।
सिद्धक्षेत्र यहांतैं शिवपाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।१२।।

वंशस्थल वनके सुन प्यारे, कुंथ नाम पर्वत दुख जारे ।
कोडि शिला शिव कोडि सुपाई, ऐसे जान नमों शिरनाई ।।१३।।

छंद सोरठा– ये शिव थानक वीर, सब ही को मंगल करो।
करो भवोदधि तीर, महिमा शुभ परिणामकी ॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीपमें दक्षिणमें भरतक्षेत्र-संबन्धी-सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घं ॥१४॥

कैलास सिद्धक्षेत्र

(छन्द : कुसुमलता)

प्रथमहि बोध प्रजाहित स्वामी, पुनि ऋषि ह्वै मुनि-मग विस्तार।
तप धर शुक्ल ध्यान दूजे कर, चारों घाति कर्म निरवार ॥
केवल लइ कैलाश शैलतें, पुनि अघाति हनि उतरे पार।
सो कैलाश शिवाचल पूजों, इतही मनतें चित्त सु सार ॥

ॐ ह्रीं कैलाश सिद्धक्षेत्र अत्रावतरावतर संवौषट्-आह्वाननं। ॐ ह्रीं कैलाश सिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ, ठः ठः!-स्थापनं। ॐ ह्रीं कैलाश सिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् – सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत।

(छन्द - बेसरी)

निरमल जल गंगातैं लाऊं त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं।
ता फल जनम जरा मृत्यु नाशै, लोक तास मकर सम भाषै ॥

ॐ ह्रीं प्रभु आदिनाथ निर्वाणक्षेत्रे कैलाशे बिराजित अतीत वर्तमान अनागत त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो जलं ॥१॥

चंदन मलयागिर घन लाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं।
भव आताप तास फल जावे, निर आकुलता सुखको पावे ॥

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो चंदन ॥२॥

अक्षत उज्ज्वल खंड विन लाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं।
ता फल हो अक्षय पद माई, क्षय होनेकी रीति मिटाई ॥

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो अक्षतं ॥३॥

कल्पद्रुमसे फूल सु लाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं ।
ता फल काम नाश होजावे, तब ही ब्रह्मचर्य मन आवे ।।

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो पुष्पम् ।।४।।

नाना रस मय चरु ले आऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं ।
ता फल भूख सभी नश जावे, तब निरमल निरवांछित थावे ।।

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो नैवेद्यम् ।।५।।

दीपक रतन जिस्यो कर लाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं ।
ता फल मिथ्या तम क्षय होई, तब सम्यक् परकाशै सोई ।।

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो दीपम् ।।६।।

धूप भली दश विधि कर लाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं ।
ता फल सकल ध्यान उपजावे, तामें कर्म-काठ क्षय पावे ।।

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ।।७।।

श्रीफल आदि सुभग फल लाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं ।
ता फल मोक्षथान फल होई, जामन मरन फेर नहिं कोई ।।

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो फलम् ।।८।।

जल आदिक बसु द्रव्य मिलाऊं, त्रय चौवीसी जिन चरण चढाऊं ।
ता फल मोक्ष पूज्य पद पावे, भव भरमनको फिर नहिं आवे ।।

ॐ ह्रीं त्रय चतुर्विंशति जिनेभ्यो अर्घ्यम् ।।९।।

प्रत्येक अर्घ

छंद अडिल्ल

देव जिनेश्वर भये अतीत जु कालमें, बीस चार जग पाल नवों तिन भाल में ।
यही भक्तिके तार शरण मोकों रहो, अर्घ जजो तिन पांय पाप मेरे दहो ।।

ॐ ह्रीं जंबुद्वीप भरतक्षेत्रसंबंधि अतीत जिनेभ्यो अर्घ्यम् ।।

आदिनाथ जिनदेव आदि महावीरलों, बीस चार जिन देव जयो अरि धीर लों।
सबही मंगल कारण सबको है सही, मन-वच-तन करि अर्घ जजों इन पद मही ।।

ॐ ह्रीं ऋषभादिमहावीरपर्यन्त चतुर्विंशतिजिनेभ्यो अर्घ्यं।।

महापद्म जिन आदि और जिन जानिये, अनन्तवीर्य पर्यन्त महा सुख थानिये।
बीस चार जिन देव होहिंगे अब सही, ते पूजों बसु द्रव्य थकी फल सुखमही ।।

ॐ ह्रीं अनागत महापद्म आदि चतुर्विंशति जिनेभ्यो महार्घ्यं।।

जयमाला

(दोहा)

तीरथ परम सुहावनूं, शिखर कैलाश विशाल।
कहत अल्प बुद्धि युक्तिसैं, सुखदाई जयमाल ।।

भविजन तरियो तीर्थसों, तुम हो श्री भगवान।
कोई न भंगे आन, जिन तीर्थ चक्रसों जान ।।१।।

तीन लोक सिरताज हो, तुमसे बडा न कोय।
सुर नर पशु खग ध्यावते, दुविधा मनकी खोय ।।२।।

चमरनि करि भक्ति करें, देव चार परकार।
यह विभूति तुमही विषैं, वंदू पाप निवार ।।३।।

देव दुंदुभी शब्द करि, सदा करै जयकार।
तथा आप परसिद्ध हो, ढोल शब्द उनहार ।।४।।

तुम वाणी सब मनन कर, समझत हैं इकसार।
अक्षरार्थ नहीं भ्रम पडे, संशय मोह निवार ।।५।।

धनपति रचि तुम आसनं, महा प्रभुता जान।
तथा स्व-आसन पाइयो, अचल रहो शिवथान ।।६।।

तीन लोकके नाथ हो, तीन छत्र विख्यात।
भव्य जीव तुम छांह में, सदा स्व-आनंद पात ।।७।।

पुष्पवृष्टि सुर करत हैं, तीनों काल मझार।
तुम सुगन्ध दश दिश रमी, भविजन भ्रमर निहार ।।८।।

देव रचित अशोक है, वृक्ष महा रमणीक।
समोसरण शोभा प्रभु, शोक निवारण ठीक ।।९।।

मानस्तंभ निहारके, कुमतिन मान गलाय।
समोसरण प्रभुता कहै, नमूं भक्ति उर लाय ।।१०।।

सुरदेवी संगीत कर, गावैं शुभ गुणगान।
भक्ति भाव उरमें जगे, वन्दत श्री भगवान ।।११।।

मंगल सूचक चिह्न हैं, कहै अष्ट परकार।
तुम समीप राजत सदा, नमूं अमंगल टार ।।१२।।

(धत्ता छन्द)

मन वच तन वंदित, कर्म निकंदित, जन्म जन्म दुख जाय पलाय।
श्री गिरि कैलास, दुख हरतारा, सुख दातारा मोक्ष दिवाय।।

ॐ ह्रीं श्री आदि प्रभु निर्वाणभूमिभ्यो महार्घ्यं ।

श्री सम्मेदशिखर-सिद्धक्षेत्र

(सवैया ३१ सा।)

सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित तप चार ही की।
एकतामें लीन होय परम ऋषिराज जी।
करम-गण नाश स्वात्मोपलब्धि कर प्रकाश।
तीन लोक चूडामणि भए शिरताज जी ।।

चरम शरीरतें कछुक ऊन पुरुषाकार।
ज्ञानमय शरीर धरें लसत शिवसमाज जी।
ते ही सिद्धमहाराज मेरे उर भासो आज।
तातैं मोह जावे भाज, सिद्ध होय काज जी ।।१।।

अडिल्ल-

सम्मेदाचल ऊपर प्रथमहिं जायके।
करे सिद्ध इमि ध्यान सु मन वच कायके।
पुनि अजितादि निसद्या भू थुति उच्चरे।
पृथक् पृथक् तिन कूट निकट पूजा करे।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसे बीस तीर्थङ्करादि असंख्यात मुनि सिद्धपद प्राप्ताय अत्र अवतर अवतर संवौषट् – आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः – स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् – सन्निधिकरणं।

अष्टक (छंद कुसुमलता।)

गंगादिक निर्मल जल प्रासुक, कनक कलशमें भरके ल्याय।
जन्म जरा मृतु नाशन कारण, धारा तीन देत हर्षाय।।
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

बावन चन्दन घिस जल निर्मल, फैली सरस सुगंध अपार।
सो ले भव-आताप हरनको, अर्चत सिद्धसमूह चितार।।
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस अखंडित उज्ज्वल अक्षत, कनक रकेबीमें भर आन।
अक्षयपदके हेत चढावत, चतुर्गति अथिर दुखद पहिचान।।
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व० स्वाहा।

नाना विधिके पुष्प मनोहर, फैली सुरभि दसों दिशि सार।
लेकर जजों शिवाचलको, मो काम शत्रु नाशे दुखकार॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन विविध प्रकार मनोहर, रसना नैन घ्राण सुखदाय।
क्षुधावेदनी नाशनकों, नैवेद्य चढावत हर्ष बढाय॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०।

दीप रतनमय परम अमोलक, तातें पूजत हों शिवराय।
मोहमहातम नाश करो मम स्वपरप्रकाशक जोत जगाय॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि०।

हरिचंदन आदिक सुगंध दस, अगन माहिं खेवत हों डार।
आठ करम मम दुष्ट जरे जिमि आठों गुण प्रगटे निज सार॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं नि० स्वाहा।

श्रीफल वर बादाम सुपारी, एला पिस्ता आदि अपार।
फलसों पूजत हों शिवभूधर, दीजे मोक्ष महाफल सार॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सुगंध तंदुल सु पुष्प चरु, दीप धूप फल अर्घ बनाय।
पद अनर्घके हेत जजत हों, सिद्ध समूह सदा उर लाय॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्ध्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तोय गंध अक्षत प्रसून चरु, दीप धूप अर्घादिक ल्याय।
पूरन अर्घ बनाय सम रचों, पूरण काज सिद्ध मम थाय॥
श्री विंशति तीर्थंकर मुख मुनि, असंख्यात जहँते शिव पाय।
सम्मेदाचल तीर्थराजमें, पूजत तिनको ध्यान लगाय॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक पूजा। छन्द गीतिका।

रागादि शत्रुनकर अजित, तातें अजित जिन नाम है।
जिन चरन रज ही परसतें, भव होत उज्ज्वल धाम है॥
ते अजितप्रभु निज ध्यान धर जहँतैं लहो शिवठाम है।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सिद्धवरकूटसे अजितनाथजिनेंद्रादि मुनि एक अरब अस्सी कोटि चौवन लाख सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि०।१।

जिनके निमतकर सकल जीवनको, परम सुख होत है।
ते सकल संभव दुःख हरता, परम केवल जोत है॥
तिन अत्र भूधरतें वरी, शिव-इंदिरा वर वाम है।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके धवलकूटसे श्री संभवनाथ जिनेन्द्रादि मुनि नौ कोडाकोडी बहत्तर लाख ब्यालीस हजार पांचसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि०॥२॥

ज्ञानादि निर्मल गुनन कर हैं, वर्धमान जिनेश जी।
तातें जु अभिनंदन सु सार्थक, नाम धर परमेश जी॥
जहँ अनिलमुकुटानल सु शक्रकृत भयो तन जिनस्वामि है।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके आनंदकूटसे श्रीअभिनंदनजिनेन्द्रादि मुनि बहत्तर कोडाकोडी सत्तर कोटि छत्तीस लाख ब्यालीस हजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तयेभ्यः अर्घं नि० ।।३।।

स्याद्वाद परम प्रकाशकर, परमत तिमिर सब नाशकें।
वर्ताय जिनवृष सुमति जिनवर, मोक्षमार्ग प्रकाशकें।।
जहँतें सुजोग निरोधकर, निज अचल थलवासी भये।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके अविचलकूटसे श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्रादि मुनि एक कोडाकोडी चौरासी कोटि बहत्तर लाख इक्यासी हजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ।।४।।

हैं कमलपत्र समान तन, जिन पद्मप्रभु जिनदेवजी।
गुण अमित मूर्ति सु अटल, पदमाकर लसत स्वयमेवजी।।
जहाँ तिष्ठ कर, कर कर्म नष्ट, सु अष्टमी भूपर गये।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके मोहनकूटसे पद्मप्रभजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोटि सत्तासी लाख तेतालीस हजार सातसे सत्तर सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ।।५।।

शोभायमान सुपार्श्व जिनके श्री सुपारशनाथजी।
जे निकटवर्ती भविनको, कर लेत हैं निज साथजी।।
त्याग परमोत्तम सुतन निज अटल मूरति परणये।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके प्रभासकूटसे श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्रादि मुनि उनचास कोडाकोडी चौरासी कोटि बहत्तर लाख सात हजार सातसे ब्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि० स्वाहा।।६।।

आनंद करत सकल जगतको, तथा मोह तिमिर हरें।
पै दोषरूप कलंक वर्जित, अमल चन्द्र प्रभा धरें।।

ते चन्द्रनाथ जिनेश चहंतैं शिवरमा-नायक भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके ललितकूटसे चन्द्रप्रभजिनेन्द्रादि मुनि चौरासी कोडाकोडी बहत्तर कोटी अस्सी लाख चौरासी हजार पांचसौ पचपन सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं नि० स्वाहा॥७॥

जे कुंद पुष्प समान दंतन, कांतिकर राजत प्रभो।
ते पुष्पदंत सु दिव्यध्वनि, कर भव्य भव तारत विभो॥
उत पुष्पवन जहँते करम हनि लोक शिखर थिर भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुप्रभकूटसे श्रीपुष्पदंतजिनेंद्रादि मुनि एक कोडाकोडी निन्यानवे लाख सात हजार चारसो सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं नि० ॥८॥

नहि करत शीतल चंद किरनन, चंदनादिक सार है।
भव-तप बुझावन वचन तिनके परम अमृत धार हैं॥
निजदेह करगिरि सो शीतल, भए जगतललाम है।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके विद्युतकूटसे शीतलनाथजिनेन्द्रादि मुनि अठारह कोडाकोडी ब्यालीसकोटी बत्तीसलाख ब्यालीस हजार नौ सो पांच सिद्धपद-प्राप्तेभ्यः अर्घं नि०॥९॥

श्रेयसस्वरूपी आप हैं, पुनि सकल जिय श्रेयस करें।
तातें श्रेयांस सु सार्थ संज्ञा, श्रेयांस प्रभु श्रेयस धरें॥
ऊरध गमनकर इस शिलातें, शिवशिला पर थिर भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके संकुलकूटसे श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रादि मुनि छयानवे कोडाकोडी छयानवे कोटि छयानवे लाख नौ हजार पांच सो ब्यालीस सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१०॥

रागादि दुस्त्यजमल हरन, जिनवचन सलिल समान हैं।
श्री विमल करत भविकजन विमल सौख्यनिधान हैं॥

इस क्षेत्रको ही विमल कीनो, यहांतें शिव जायके।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुवीरकुलकूटसे श्रीविमलनाथजिनेन्द्रादि मुनि सत्तर कोटि सात लाख छह हजार सातसौ ब्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।११।।

जिनके सु स्वगुन अनंत कथ, गनधर लहत नहिं अंत हैं।
सु अनंत संसृत दुःख नाशन, श्री अनंत महंत हैं ।।
सु अनंतधाम लहो जहांतें, अचल अमर सुथिर भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके स्वयंभूकूटसे श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्रादि मुनि छयानवे कोडाकोडी सत्तर कोटि सत्तर लाख सत्तर हजार सातसौ सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१२।।

संसार-दुःख समुद्र डूबत, भव्य जीव उबारके।
सुखधाम धारत धर्मप्रभु, सुधर्म विधि विस्तारके ।।
ते धर्मनायक इस धरातें, शिवरमानायक भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुदत्तकूटसे श्रीधर्मनाथजिनेंद्रादि मुनि उन्नीस कोडाकोडी उन्नीस कोटि नौ लाख नौ हजार सातसौ पंचानवे सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१३।।

जे शांत करत समस्त पातक, एक छिनमें नाथजी।
जिन नाम मंत्र प्रभावतें, इन्द्रादि भए सनाथजी ।।
ते शांतिनाथ अपार भवदधि, पार या भूतें थये।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है ।।

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके शान्तिप्रभकूटसे श्रीशान्तिनाथ-जिनेन्द्रादिमुनि नौ कोडाकोडी नौ लाख नौ हजार नौ सौ निन्यानवे सिद्धपद प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१४।।

कुंथ्वादि जीवनमें दयाजुत हृदै परम विराग जी।
श्री कुंथुस्वामी चक्र लक्ष्मी जीर्ण तृणवत् त्यागजी॥
जहँते विमल तप धार सकल विकार तज निरमल भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके ज्ञानधरकूटसे श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्रादि मुनि छयानवे कोडाकोडी बत्तीस लाख छयानवे हजार सातसौ ब्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१५॥

सब द्रव्य गुण पर्याय जानत राग द्वेष न पाइये।
सो तीन लोक प्रसिद्ध अरजिन, चरण नितप्रति ध्याइये॥
तहँ समोशरणविभूति मध, सो तिष्ठ पुनि निज थल गये।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके नाटककूटसे श्रीअरहनाथजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोटि निन्यानवे लाख निन्यानवे हजार सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्व०॥१६॥

जिनमल्ल दुर्जय काम भट, जीतन सुमल्ल प्रधान हैं।
सतमल्लिका सर सुरभितन जुत मोहतम हनि भान हैं॥
जिहि थानतें निर्वाण पहुँचे अचल अविनाशी भए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सम्बलकूटसे श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्रादि मुनि छयानवे कोटि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१७॥

जिनके सुव्रत जयवंत जगमें, सुगुण रत्ननिधान हैं।
चिर लगे पाप-पहार चूरनको सु वज्र समान हैं॥
ते धार मुनिसुव्रत जिनेश्वर, जहाँतें निज थल गए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके निर्जरकूटसे श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्रादि मुनि निन्यानवे कोडाकोडी सत्तानवे कोटि नौ लाख नौ सौ निन्यानवे सिद्धपद-प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥१८॥

इन्द्रादि देवनिकर नमति, तातें सुनमि जिन नाम हैं।
मिथ्यात मतमय तिमिर नाशत, कर विहार सुस्वामि हैं॥
धर तुर्ज ध्यान सु अंतमें, जहँतें सुलोक शिखर थए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके मित्रधरकूटसे श्रीनमिनाथजिनेन्द्रादि मुनि नौ सौ कोडाकोडी एक अरब पैंतालीस लाख सात हजार नौ सौ ब्यालीस सिद्धपद-प्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१९।।

ज्ञानी जननकर सदा जिनके, पार्श्व अनुभवरूप हैं।
ते पार्श्वस्वामी भव्य भवफांसी निवारन भूप हैं॥
जहँते विमल तन त्याज सिद्धसमाजमें चिर थिर थए।
तिहि शैलराज पवित्रको, मो बारबार प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रके सुवर्णभद्रकूटसे श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रादि मुनि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालीस सिद्धपदप्राप्तेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२०।।

इत्यादि जे ऋषिपाल, भव-दुख जालको छेदत भए।
इहि शैलते गति ऊर्ध्व करके, अचल सौख्य मई थए॥
सो आर्यक्षेत्र सुमौल गिरिपति, तीर्थराज महान है।
मैं जजत अर्घ चढायके, मो करहु परम कल्यान है॥

ॐ ह्रीं विंशति तीर्थंकरादि असंख्यात मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यः श्रीसम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२१।।

जयमाला

(पद्धरी छंद)

जय जय सम्मेदशिखर सुनाम, पूरत भविजनके सकल काम।
जय कुगति भीतजन आर्तहर्न, पुनि पुनि आयो जहँ समोशर्न॥

सुर इन्द्रसु पूजत नित्य आन, अहमिंद्र सु थल ही धरत ध्यान।
वंदित चारणऋषि कलिल हरन, जिनविंशति तीर्थ सु भूमि धरन॥

सो ध्यान अध्ययन परम थान, गंधर्व करत जिनगुण सुगान।
जय जय यात्री जहँ करत एव, खेचर भूचर नित करत सेव॥

ऋतु छै कर सन्तन राजमान, जहँ मुनिजन नितही धरत ध्यान।
वर बोध-सुधामृत देन दक्ष, परिणाम सहज तहँ होय स्वच्छ॥

तुमको जजहों भजहों सदीव, नहीं मिथ्यातीर्थ नमों कदीव।
दीजे हमको सो समाधिथान, तुम भक्त सर्व सुख गुणनिधान॥

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपापुरी सिद्धक्षेत्र

उत्सव किय पनवार जहँ, सुरगण युत हरि आय।
जजों सुथल वसुपूज्य सुत, चंपापुर हर्षाय॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं।

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनं।

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणं।

(चाल नंदीश्वर पूजाकी)

सम अमिय विगत त्रस वारि, लै हिम कुंभ भरा।
लख सुखद त्रिगद हर तार, दै त्रय धार धरा॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निर्वृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कश्मीरी केसर सार, अति हि पवित्र खरी।
शीतल चंदन संग सार, लै भवताप हरी॥

श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो भवाताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिद्युति-सम खंड-विहीन, तंदुल लै नीके।
सौरभयुत नव वर बीन, शालि महा नीके॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय; पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

अलि लुभन सुभन दृग घ्राण, सुमन जु सुर-द्रुमके।
लै वाहिन अर्जुन बान, सुमन दमन झुमके॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रस पूरित तुरित पकवान, पकव यथोक्त घृती।
क्षुधगद मद प्रदमन जान, लै विध युक्त कृती॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तम अज्ञ प्रनाशक सूर शिवमग परकाशी।
लै रत्नदीप द्युतिपूर, अनुपम सुखराशी॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर परिमल द्रव्य अनूप, सोध पवित्र करी।
तस चूरण कर कर धूप, लै विधि कुंज हरी॥

श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पक्व मधुर रसबान, प्रासुक बहुविधके।
लखि सुखद रसन दृग ध्राण, ले प्रद पद सिद्धके॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल वसु द्रव्य मिलाय, लै भर हिम थारी।
वसु अङ्ग धरापर ल्याय, प्रमुदित चित्तधारि॥
श्री वासुपूज्य जिनराय, निवृति थान प्रिया।
चंपापुर थल सुखदाय, पूजों हर्ष हिया॥

ॐ ह्रीं चंपापुर-सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-

भये द्वादशम तीर्थपति चम्पापुर निर्वान।
तिन गुणकी जयमाल कछु, कहों श्रवण सुखदान॥

ऊरध अधो सु मध्य है, तीन भाग यह लोक।
तिनमें तुम उत्कृष्ट हो, तुम्हैं देत नित धोक॥

तुम समान समरथ नहीं, तीन लोकमें और।
स्वयं शिवालय राजते, स्वामी हो शिरमौर॥

जगत नाथ जग ईश हो, जगपति पूजें पाय।
मैं पूजूं नित भावयुत, तारण तरण सहाय॥

महा भूति इस जगतमें, धारत हो निरभंग।
सब विभूति जग जीतिकै, पायो सुख सरवंग॥

मुनि मन करण पवित्र हो, सब विभाव को नाश।
तुमको अंजुलि जोरकर, नमूं होत अघ नाश॥

मोक्षरूप परधान हो, ब्रह्मज्ञान परवीन।
बंध रहित शिवसुख सहित, नमें संत आधीन॥

जामें जन्म मरण नहीं, लोकोत्तर कियो वास।
अचल सुथिर राजै सदा, निजानंद परकाश॥

इन्द्रादिक पूजित चरन, महा भक्ति उरधार।
तुम महान ऐश्वर्यको, धारत हो अधिकार॥

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-पंचकल्याणकभूमि-चम्पापुरतीर्थक्षेत्रेभ्यो महार्घं।

(दोहा)

श्री चम्पापुर जे पुरुष, पूजै मन वच काय।
आनंद शांति सो पाय ही, सुख सम्पति अधिकाय॥

इत्याशीर्वाद

સહજ ચિદાનંદ.

श्री राजगृही तीर्थक्षेत्र पूजा

(सोरठा)

जम्बूद्वीप मझार, दक्षिण भरत सु क्षेत्र है।
ता मधि अति विख्यात, मगध सुदेश शिरोमणी॥१॥

अडिल्ल

मगध देशकी राजधानि सोहे सही।
राजगृही विख्यात पुरातन है मही॥
तिस नगरीके पास महा गिरि पांच हैं।
अति उतंग तिन शिखर सु शोभ लहात हैं॥२॥

विपुलाचल, रतना, उदयागिरि जानिये।
सोनागिरि व्यवहार सुगिरि, शुभ नाम ये।।
तिनके ऊपर मंदिर परम विशालजी।
एकोनविंशति वन सु पूजहु लालजी।।३।।

दोहा

तीर्थंकर तेईसके, समोशरण सुखदाय।
करि विहार तहँ आय हैं, वासुपूज्य नहिं आय।।४।।

चौवीसों जिनराजके, बिंब चरण सुखदाय।
तिन सबकी पूजा करों तिष्ठ तिष्ठ इत आय।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रके पंच पर्वतोंपर उनईस मंदिरस्थ जिनबिंब व चरणसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननं)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (स्थापनं)। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सन्निधिकरणं)।

अष्टक। त्रिभंगी छन्द।

क्षीरोदधि पानी, दूध समानी, तसु उनमानी, जल लायो।
तसु धार करीजे, तृषा हरीजे, शांति सुदीजे, गुण गायो।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुख हारी।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर पावन, केशर बावन, गंध घिसाकर ले आयो।
मम दाह निकंदो भव दुख खंदो तुम पद वंदों शिरनायो।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुख हारी।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अनियारे जल सु पखारे, पुंज तिहारे ढिग लाये।
अक्षय पद दीजे, निज सम कीजे, दोष हरीजे, गुण गाये।।

श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी ।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला सुचमेली, कुन्दबकौली, चंप जुहाले, गुलाब धरों।
अति प्रासुक फूला, हे गुण मूला, काम समूला नाश करौ ।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी ।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि० स्वाहा ।

फैंनी अरु बाबर, लाडू घेवर, तुम पद ढिग धर, सुखपाये।
मम क्षुधा हरीजे, समता दीजे, बिनती लीजे, गुण गाये ।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी ।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि० स्वाहा ।

दीपक उजियारा, कर्पूर प्रजारा, निजकर धारा अर्ज करूं।
मम तिमिर हरीजे ज्ञान सुदीजे, कृपा करीजे पांव परूं ।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी ।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्व० स्वाहा।

दश गंध कुटाया, धूप बनाया, अग्नि जलाया, कर्म नशै।
मम दुख करो दूरा, करमहिं चूरा, आनंद पूरा, सुख विलसे ।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी ।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम छुहारे, पिस्ता प्यारे, श्रीफल धारे, भेंट करूं।
मन वांछित दीजे, शिव सुख कीजे, ढील न कीजे मोद धरूं ।।

श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य मिलाये, भवि मन भाये, प्रभु गुण गाये, नृत्यकरो।
भवभव दुखनाशा शिव मग भासा, चित्त हुलाशा सुख करौं।।
श्री पंचमहागिर, तिन पर मंदिर, शोभित सुंदर, सुखकारी।
जिनबिंब सु दर्शत, आनंद बरसत, जन्म मृत्यु, भय दुखहारी।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीराजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक अर्घ

(गीता छन्द)

अंतिम तीर्थंकर वीरस्वामी, समोशरण युत आय हैं।
तहँ राय श्रेणिक पूजकर, उन धर्म सुनि सुख पाय हैं।।

गौतम सु गणधर, ज्ञान चहु धर, भव्य संबोधे तहाँ।
सो वाणिरचना ग्रंथ मांही, आज प्रचलित है यहाँ।।

दोहा- सो विपुलाचल सीस पर, छह मंदिर विख्यात।
द्वय प्रतिमा शोभा धरें, चरण पादुका सात।।

ॐ ह्रीं श्री विपुलाचलपर्वत पर सात मंदिरस्थ द्वय प्रतिमा व सात युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल-

रतनागिरि पर दो मंदिर सोहैं सही।
प्रतिमा दो रमणीय शोभा परम लही।।
चरण पादुका चार भीतरै सोहनी।
एक पादुका दूजे मंदिरमें बनी।।

दोहा- वसुविध द्रव्य मिलायकर, दोइ कर जोडे सार ।
प्रभुसे हमरी वीनती, आवागमन निवार ।।

ॐ ह्रीं श्री रतनागिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व पांच युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अडिल्ल-

उदयगिर पर मंदिर दो हैं विशाल जी ।
श्री पारस प्रभु आदि बिंब छह हाल जी ।।
चरणपादुका तीन विराजत हैं सही ।
दर्शन हैं छह जगह परम शोभा लही ।।

सोरठा– अष्ट द्रव्य ले थार, मन वच तनसे पूज हों ।
जन्म मरण दुख टार, पाऊं शिव सुख परमगति ।।३।।

ॐ ह्रीं श्री उदयगिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ छह प्रतिमा व तीन युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

दोहा- श्रमणागिरिके सीसपर, दो मंदिर सुविशाल ।
आदिनाथजी मूल हैं, दर्शन भव्य निहाल ।।
द्वय प्रतिमा इक चरण तँह राजत हैं सुखकार ।
अष्ट द्रव्य युत पूज हैं, ते उतरे भवपार ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री श्रमणगिर पर्वतपर दो मंदिरस्थ दो प्रतिमा व युगल चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्पामीति स्वाहा।।४।।

पद्धरी छन्द ।

श्री गिरि व्यवहार अनूप जान, तँह मंदिर सात बने महान ।
तिनके अति उन्नत सिखर सोय, देखत भवि मन आनंद होय ।।
ले अष्ट द्रव्य युत पूज कीन, मन वच तन कर त्रय धोक दीन ।
सब दुष्ट करम भये चूर चूर, जासे सुख पाया पूर पूर ।।

ॐ ह्रीं श्री व्यवहारगिर पर्वतपर सात मंदिर, गुफामें अनेक प्रतिमां चरणकमलेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जयमाला

(दोहा)

उन्नत पर्वत पांच पर, उनईस जिनालय जान।
मुनिसुव्रत जिनराजके, कल्याणक चहु जान॥

तीन लोकके पूज्य हो, भक्ति भाव उर धार।
धर्म अर्थ अरु मोक्षके दाता तुम हो सार॥

दया मोह पर पापतें दूर भये स्वतंत्र।
ब्रह्मज्ञानमें लय सदा, जपूं नाम तुम मंत्र॥

तुम ही पूजन योग्य हो, तुम ही हो आराध्य।
महा साधु सुख हेतुतें, साधे हैं निज साध्य॥

निज पुरुषारथ सधनको, तुमको अर्चत जक्त।
मनवांछित दातार हो, शिव सुख पावै भक्त॥

ध्यावत है नितप्रति तुम्हें, देव चार परकार।
तुम देवनके देव हो, नमूं भक्ति उर धार॥

इन्द्र समान न भक्त है, तुम समान नहीं देव।
ध्यावत है नित भावसों, मोक्ष लहै स्वयमेव॥

तुम देवनके देव हो, सदा पूजने योग्य।
जे पूजत हैं भावसों, भोगैं शिवसुख भोग॥

(धत्ता छन्द)

मुनिसुव्रत वंदित, मन आनंदित, भव दुख दंदहि जाय पलाय।
श्री पंच पहाडी, अति सुखकारी, पूजत भविजन शिव सुखदाय॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृहीसिद्धक्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पंच महा गिरि राजको, पूजे मन वच काय।
पुत्र पौत्र संपति लहे, अनुक्रम शिवपुर जाय॥

इत्याशीर्वादः।

श्री पावापुर-सिद्धक्षेत्र पूजा

जिहिं पावापुर छिति अघति, हत सन्मति जगदीश।
भये सिद्ध शुभथान सो, जजों नाय निज शीश॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

शुचि सलिल शीतौ कलिल रीतौ श्रमन चीतो लै जिसो।
भर कनक झारी त्रिगद हारी दै त्रिधारी जित तृषो॥
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही॥१॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भ्रमन भ्रमत अशर्म तपकी, तपन कर तपताइयो।
तसु वलयकंदन मलय-चंदन, उदक संग घिस ल्याइयो॥
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही॥२॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अखंड नवीन लीने, ले महीने ऊजरे।
मणिकुन्द इंदु तुषारद्युति-जित, कन रकाबीमें धरे॥
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही॥३॥

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

मकरंद लोभन सुमन शोभन सुरभि चोभन लेय जी।
मह समर हर वर अमर-तरुके, घ्रान-दृग हरखेय जी॥

वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ।।४।।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

नैवेद्य पावन क्षुध मिटावन सेव्य भावन युत किया।
रस मिष्ट पूरति इष्ट सूरति लेयकर प्रभु हित हिया ।।
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ।।५।।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम अज्ञ नाशक स्वपर भासक सेय परकाशक सही।
हिमपात्रमें धर मौल्यविन वर द्योतधर मणि दीपही ।।
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

आमोदकारी वस्तुसारी विध दुचारी-जारनी।
तसु तूपकर कर धूप ले दश दिश-सुरभि-विस्तारनी ।।
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ।।७।।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

कर भक्क पक्क सुचक्य सोहन, सुक्क जन मन मोहने।
वर सुरस पूरित त्वरित मधुरत लेयकर अति सोहने ।।
वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ।।८।।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल गंध आदि मिलाय बसुविध थार स्वर्ण भरायकैं।
मन प्रमुद भाव उपाय कर ले आय अर्घ बनायकैं ।।

वर पद्मवन भर पद्म सरवर बहिर पावाग्राम ही।
शिवधाम सन्मतस्वामि पायो, जजों सो सुखदा मही ।।६।।

ॐ ह्रीं श्री वीरनाथजिनेन्द्रस्य पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

चरम तीर्थ करतार श्री वर्धमान जगपाल।
कल मल दल विध विकल ह्वै, गाऊं तिन जयमाल ।।

(पद्धडी छन्द)

जय जय सुवीर जिन मुक्तिथान, पावापुर वनसर शोभवान।
जे सित अषाड छह स्वर्गधाम, तज पुष्पोत्तर सुविमान ठाम ।।१।।

कुण्डलपुर सिद्धारथ नृपेश आये त्रिशलाजननी उरेश।
सित चैत्र त्रयोदशि युत त्रिज्ञान जनमे तमअज्ञ-निवार भान ।।२।।

पूर्वाह्न धवल चउदिश दिनेश किय नह्वन कनकगिरि-शिर सुरेश।
वय वर्ष तीस पद कुमार काल, सुख दिव्य भोग भुगते विशाल ।।३।।

मारगसिर अलि दशमी पवित्र, चढ चंद्रप्रभा शिविका विचित्र।
चलि पुरसों सिद्धन शीश नाय धार्यो संजम वर शर्मदाय ।।४।।

गत वर्ष दुदश कर तप-विधान दिन शित वैशाख दशैं महान।
रिजुकूला सरिता तट स्वसोध उपजायो जिनवर चरम बोध ।।५।।

तब ही हरि आज्ञा शिर चढाय रचि समवसरण वर धनदराय।
चउ संघ प्रभृति गौतम गणेश युत तीस वरष विहरे जिनेश ।।६।।

भवि जीव देशना विविध देत आये पर पावानगर खेत।
कार्तिक अलि अन्तिम दिवस ईश कर योगनिरोध अघातिपीस ।।७।।

ह्वै अकल अमल इक समयमाहिं पंचम गति पाई श्री जिनाह।
तब सुरपति जिनरवि अस्त जान आये तुरंत चढि निजविमान ।।८।।

कर वपु अरचा थुति विविध भांत लै विविध द्रव्य परिमल विख्यात।
तब ही अग्नींद्र नवाय शीश संस्कार देहकी त्रिजगदीश ॥६॥

कर भस्म वंदना निज महीय निवसे प्रभुगुन चिंतवन स्वहीय।
पुनि नर मुनि गनपति आय आय बंदी सो रज शिर नाय नाय ॥१०॥

तबहीसों सो दिन पूज्यमान पूजत जिनगृह मन हर्ष मान।
मैं पुन पुन तिस भुवि शीशधार, वंदों तिन गुणधर उर मझार ॥११॥

कुसुमलता छन्द

श्री सन्मति जिन अंघ्रिपद्म युग जजैं भव्य जो मन वच काय।
ताके जन्म जन्म संचित अघ जावहिं इक छिन मांहि पलाय॥
धनधान्यादिक शर्म इंद्रपद लहै सो शर्म अतीन्द्री थाय।
अजर अमर अविनाशी शिवथल वर्णो दौल रहे शिर नाय॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुरसिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पूजा

(छप्पय)

श्री गिरनार शिखर परवत, दक्षिण दिश सोहे।
नेमिनाथ जिन मुक्तिधाम, सब जन मन मोहे॥
कोटि बहत्तर सात शतक, मुनि शिवपद पायो।
ता थल पूजन काज, भविक चित अति हर्षायो॥
तिस तीरथराज सु क्षेत्रको, आह्वानन विधि ठानकर।
पूजो त्रिजोग मनवचनतन, श्रावकजन गुनगानकर॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीगिरनारसिद्धक्षेत्रसे मोक्षपदप्राप्त श्री नेमिनाथ, शंबुकुमार, प्रद्युम्नकुमार, अनिरुद्धकुमार और बहत्तर करोड़ सातसै मुनि अत्र अवतर अवतर संवौषट् (आह्वाननम्)। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

(दोहा)

प्रभु तुम राजा जगतके, कर्म देहि दुख मोय।
करूं यथारथ बीनती, हम पै करुणा होय॥

(चाल लावनीकी)

तीरथ गढ़ गिरनारको नित पूजो हो भाई।
हेम भ्रंग भर तीरथोदक, शुभ प्रासुक पावन लाई॥
जन्म मरण जरा नाशन कारन, धार देहु ढरकाई॥
नित पूजो हो भाई, तीरथ गढ गिरनारको।
जंबुद्वीप भरत आरजमें, सोरठ देश सोहाई।
सेसावनके निकट अचल तहं, नेमिनाथ शिवपाई॥ नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर चन्दन कदली नन्दन, केशर संग घसाई।
भवदुखताप मिटावन लखकै, अरचों जिनपद आई॥ नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

शसि सम श्वेत वर्ण मुक्ता शित, अछत अखंड सुहाई।
चरन शरन प्रभु अक्षै निधि लख, पुंज दिये सो पाई॥ नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुम वर्णपन विविध गंध जुत, चुन चुन भेट धराई।
पूजन किय हो शील वर्द्धना, मनोबाण जय लाई॥ नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खाजा ताजा मोदक गूजा, फेणी सरस बनाई।
षट्रस व्यञ्जन मिष्ट सुधामय, हेम थार भर लाई॥ नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ललित कर घृत पूरित भर, उज्वल जोति जगाई।
करों आरती जिनपद केरी, मिथ्या तिमिर पलाई ।। नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कर्पूर चूर बहु, द्रव्य सुगंध मिलाई।
खेय धनंजय धूप धूम मिस वसु विधि देय जराई ।। नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला दाडिम श्रीफल पिस्ता, पुंगीफल सुखदाई।
कनक पात्रधर भविजन पूजें, मनवांछित फल पाई ।। नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्यका अर्घ संजोवो, घंटा नाद बजाई।
गीत नृत्यकर जजों 'जवाहर', आनन्द हर्ष बधाई ।। नित०

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जोगीरासा छन्द)

उर्जयंत गिरिराज मनोहर, देखत ही मन मोहे।
राजुलपति शिवथान बिराजे, उत्तम तीरथ जो है।।
पुत्र पौत्र हरि कृष्ण प्रचूर मुनि पंचमगति तहं पाई।
तास तनी महिमाको वरने, श्रवण सुनत हरषाई।।

(पद्धडी छन्द)

जै जै जै नेमि जिनन्द चन्द्र, सुर नर विद्याधर नमत इन्द्र।
जै सोरठ देश अनेक थान, जूनागढ़पै शोभित महान।।

तहाँ उग्रसेन नृप राजद्वार, तोरण मंडप शुभ बने सार।
जै समुदविजय सुत व्याह काज, आये हर बल जुत आन साज।।

तहं जीव बंधे लख दया धार, रथ फेर जंतु बंधन निवार।
द्वादश भावन चिंतवन कीन, भूषण वस्त्रादिक त्याग दीन।।

तज परिग्रह परिणय सर्व संग, ह्वै अनागार विजई अनंग।
धर पंच महाव्रत तप मुनीश, निज ध्यान धरो हो केवलीश ॥

इस ही सुथान निर्वाण थाय, सो तीरथ पावन जगत माय।
अरु शंबु आदि प्रद्युमनकुमार, अनिरुद्ध लही पदमुक्ति धार ॥

पुनि राजुल हू परिवार छांड, मन वचन कायकर जोग मांड।
तप तप्यौ जाय तिय धीर वीर, सन्यास धार तजकें शरीर ॥

तिय लिंग छेद सुर भयो जाय, आगामी भवमें मुक्ति पाय।
तहँ अमरगण उर धर अनन्द, नितप्रति पूजत हैं श्री जिनन्द ॥

अरु निरतत मघवा युक्तनार, देवनकी देवी भक्तिधार।
ता थेइ थेइ थेइ थेइ करन जाय, फिरि फिरि फिरि फिरि फिरकी लहाय ॥

मुहचंग बजावत तारबीन, तननन तननन तन अति प्रवीन।
करताल ताल मिरदंग और, झालर घंटादिक अमित शोर ॥

आवत श्रावकजन सर्व ठाम, बहु देश देश पुर नगर ग्राम।
हिलमिल सब संघ समाज जोर, हय गय वाहन चढ रथ बहोर ॥

जात्रा उत्सव निशदिन कराय, नर नारिउ पावत पुण्य आय।
को वरनत तिस महिमा अनूप, निश्चय सुर शिवके होय भूप ॥

धत्ता

श्री नेमि जिनन्दा आनन्द कन्दा पूजत सुर नर हित धारी।
तिस नमत 'जवाहर' जुग कर शिरधर हर्ष धार गढ़ गिरनारी ॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्रसे मोक्षपदप्राप्त नेमिनाथ शंबु प्रद्युम्न अनिरुद्ध और बहत्तर कोटि सातसौ मुनि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जे नर बन्दत भाव धर, सिद्धक्षेत्र गिरनार।
पुत्र पौत्र सम्पति लहे, पूरन पुण्य भंडार ॥

इत्याशीर्वाद

श्री बाहुबली (गोम्मटस्वामी) पूजा

(अडिल्ल)

आदीश्वर के द्वितीय पुत्र बाहुबली।
कामदेव भये प्रथम श्री बाहुबली।
नये न मस्तक युद्ध कियो बाहुबली।
चक्री अरु विधि जीत जजूं बाहुबली।।

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुरके उद्यानसे मोक्षपदप्राप्त श्री बाहूबलीस्वामी अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अष्टक

पंचम उदधितनो जल लेकर कंचन झारी मांहि भरूं।
जन्म जरा मृत्यु नाश करनको, बाहुबली पदधार करूं।।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशरसंग घिसूं मलयागिरि, चंदन अधिक सुगंध रचूं।
भव आताप विनाशन कारन, श्री बाहुबली पद चरचूं।।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्ज्वल मुक्ताफल सम तन्दुल, धोकर कंचन थाल भरूं।
अक्षयपदके हेतु विनयसे, बाहुबलि ढिग पुञ्ज करूं।।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी चंप चमेली सुमन सुगंधित लाय धरूं।
मदनबाण निरवारण कारण बाहुबलिको भेट करूं।।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना विध पकवान मनोहर, खाजे ताजे षट् रसमय।
क्षुधारोग विध्वंस करनको, जजूं बाहुबली चरन उभय।।

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सजो दीप घृत वा कर्पूरका, जासों दशदिश तम भागे।
नाशन अंतर तमको आरति, करूं बाहुबली प्रभु आगे ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने मोहान्धकारविध्वंसनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर कर्पूर धूप दश, अंगी अगनीमें खेऊं।
दुष्ट अष्ट विधि नष्ट करनको, श्री बाहुबली पद खेऊं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अनार जाम नारंगी, पुङ्गी खारक श्रीफलको।
मोक्ष महाफल प्राप्त हेतु मैं, अर्पन करूं बाहुबलीको ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐसे मनहर अष्ट द्रव्य सब, हेम थाल भरके लाऊं।
पद अनर्घ के प्राप्ति हेतु मैं, श्री बाहुबली गुण गाऊं ॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

जय जय सुख सागर, सुयश उजागर, बोधदिवाकर उदयकरा।
शिवमगपरकाशक भ्रमतमनाशक भविजनमन आनन्दधरा ॥

दोहा

तीन लोक मंगल करण, दुखहारण सुखकार।
हमको मंगल द्यो महा, पूजों बारम्बार ॥

आप धर्मके सामने, और धर्म लुप जांय।
धर्मचक्र आयुध धरो, शत्रु नाश तब पाय ॥

सत्य शक्ति तुम ही सही, सत्य पराक्रम जोर।
है प्रसिद्ध इस जगतमें, कर्म शत्रु शिरमोर ॥

मंगलमय मंगल करण, तीन लोक विख्यात।
सुमरण ध्यान सुकरत ही, सकल पाप नशि जात ॥

घातिरहित स्वपर दया, निजानन्द रसलीन।
सुखसों अवगाहन करैं, संत चरण आधीन॥

निजानंद स्वदेशमें, खंड खंड नहीं होय।
पूरण अविनाशी सुखी, पूजत हूं भ्रम खोय॥

सिद्ध समान सु शुभ नहीं, और नाम विख्यात।
कभू न जगमें जन्म फिर, सोई दृढ कहलात॥

जन्म मरणके कष्टसे सर्व लोक भयवंत।
ताको नाश अभय करण, तुम्हैं नमें जिय संत॥

असाधारण असमान हो, सर्वोत्तम उतकृष्ट।
परसों भिन्न अखिन्न हो, पायो पद अविनष्ट॥

ॐ ह्रीं श्रीमद्बाहुबलीस्वामिने पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

सबविधि सुखकारी महिमा भारी, भुजबलि थारी अपरंपार।
सुन विनय हमारी शिवसुखकारी, हे त्रिपुरारी अचल अपार॥

इत्याशीर्वादः।

पोन्नूर तीर्थक्षेत्र

(दोहा)

पोन्नूर क्षेत्र तीरथ परम, है रमणीय सुथान।
भक्ति भावसे सदा नमूं, होय पापकी हानि॥

श्री कुंदकुंदाचार्य जहँतैं गये, विदेहक्षेत्र प्रभु पास।
तिनके पदपंकज नमूं, नाशैं भव आताप॥

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रस्थ- कुंदकुंदाचार्यचरणकमल ! अत्र अवतरावतर संवोषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

सुवर्ण झारी रतन जडिये, मांहि गंगा जल भरो।
ऋषिराज चरण चढाय भविजन जन्म जरा मृत्यु हरो।।
संसार उदधि उबारनेको लीजिए सुध भावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों।।१।।

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे जलं निर्व० स्वाहा।

जाकी सुगंध थकी अहो, अलि गुंजते आवे घने।
सो मलय संग घसाय केसर पूज पद ऋषिवर तने।।
भव आताप निवारनेको लीजिए सुध भावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों।।२।।

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे चंदनं निर्व० स्वाहा।

अक्षत अखंडित अति हि सुंदर जोति शशि सम लीजिए।
शुभ शाल उज्ज्वल धोयकर सु ऋषिवर चरण पूजिए।।
पद अक्षय कारण लेय भविजन शुद्ध निरमल भावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों।।३।।

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे अक्षतं निर्व० स्वाहा।

है मदन दुष्ट अत्यन्त दुर्जय हते सबके प्रान ही।
ताके निवारण हेत कुसुम मंगाय रंजन घ्रान ही।।
जाकी सुवास निहार षटपद दौरि आवे चावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों।।४।।

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे पुष्पं निर्व० स्वाहा।

रसपूर रसना घ्रान रंजन चक्षु प्रिय अति मिष्ट ही।
ऋषिराज चरण चदाय उत्तम क्षुधा होवे नष्ट ही।।
भरि थाल कंचन विविध व्यंजन लीजिए सुध भावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों।।५।।

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे नैवेद्यं निर्व० स्वाहा।

त्रैलोक्य गर्भित ज्ञान जाको मोह निजवस कर लियो।
अज्ञान तममें पड्यो चेतन चतुर गति भरमन कियो॥
छिन मांहि मोह विध्वंस होवे आरती कर चावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों॥६॥

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अगर अम्बर वास सुंदर धूप प्रभु ढिग खेवही।
ए दुष्ट कर्म प्रचण्ड तिनको होय ततछिन छेवही॥
सो धूप वसु विधि जरत कारण लीजिए सुध भावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों॥७॥

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादाम श्रीफल लौंग पिस्ता लेय शुद्ध सम्हालही।
सैकार दाख अनार केला तुरत टूटे डाल ही॥
भवि लेय उत्तम हेत शिवके छूटे विधिके दावसों।
पोन्नूरगिरि श्री कुंदकुंद-चरण पूज उछावसों॥८॥

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रे श्रीकुंदकुंददेवचरणकमलपूजनार्थे फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(छप्पय चाल)

जन्म मृत्यु जल हरै, गंध आताप निवारै।
तंदुल पदके अख मदनकूं सुमन विदारै॥
क्षुधा हरण नैवेद्य दीपतें ध्वान्त नसावै।
धूप दहै वसु कर्म मोक्ष सुख फल दरसावै॥
ए वसु द्रव्य मिलायकै अर्घ प्रभुको कीजिए।
कर पूजा पोन्नूरगिरिकी, नरभवका फल लीजिए॥

ॐ ह्रीं पोन्नूरतीर्थक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तुमको नितप्रति वंदिके, रचूं यह जयमाल।
भव भव के पातिक हरो, करो सकल कल्यान ॥

चौपाई

अठाईस मूलगुणधारी सो सब साधु वरैं शिवनारी।
साधु भये शिव साधनहारैं, सो तुम साधु हरो अघ म्हारे ॥

मूल तथा सब उत्तर गाये, ये गुण पालत साधु कहाए।
साधुनके गुण साधुहि जाने, होत गुणी गुणही परमाने ॥

नेम थकी शिववास करे जो, द्रव्य थकी शिवरूप करै जो।
जीव सदा चित भाव विलासी, आपही आप सधै शिवराशी ॥

ज्ञानमई निज ज्योति प्रकाशी, भेद विशेष सबै प्रतिभासी।
एक ही बार लखाय अभेदा, दर्शनको सब रोग-बिछेदा ॥

आपहि साधन साध्य तुम्ही हो, एक अनेक अबाध तुम्ही हो।
चेतनता निज भाव न छारे, रूप स्पर्शन आदि न धारे ॥

जो उत्पाद भयो इकबारा सो निरधार रहे अविकारा।
है परनाम अभिन्न प्रणामी, सो तुम साधु भये शिवगामी ॥

जो गुण वा परियाय धरो हो, सो निज मांही अभिन्न वरो हो।
मंगलमय तुम नाम कहावैं, लेत हि नाम सु पाप नसावै ॥

मंगलरूप अनूपम सोहै, ध्यान किये नित आनन्द होहै।
पाप मिटे तुम शरण-गहेतें, मंगल शरण कहाय लहैतें ॥

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदऋषिराजचरणकमलपूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नमन करत चरनन परत, अहो गरीब निवाज।
पंच परावर्तननितैं निरवारो ऋषिराज ॥

इत्याशीर्वादः

स्वानुभूति-तीर्थ सुवर्णपुरी पूजा

(राग--सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान सुमंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
तू परमातमा है, ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी ।।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्रावतर अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वानम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतने विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भव भव, इति सन्निधिकरणम् ।

उज्ज्वल जल शितल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहान-गुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,

अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं० ।

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वानुभूतितीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्वपामीति स्वाहा ।

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो फलं० ।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ॥

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्व०

जयमाला

(राग--जय केवलभानु; छंद तोटक)

यह स्वर्णपुरी अति पावन है, मंगल मंगल मंगलकर है।
यह मुक्तिमार्ग प्रकाशक है, स्वानुभूतितीर्थ अति मंगल है ॥
स्वर्णिम आभा है स्वर्णपुरीकी, स्वर्णिम है इतिहास बना।
गुरुवरकी अध्यातम वाणीसे, निर्मित यह तीरथधाम महा ॥
सातिशय जिनवरमंदिर है, दिव्यमूरति सीमंधरजिनकी।
जिनके दर्शनकर जगप्राणी, आतमशांति सुख पाते हैं ॥
विदेही चितार है समवसरण, जहाँ कुंदप्रभुजी पधारे हैं।
उन्नत मानस्तंभ दिव्य महा, विदेहीनाथ बिराजे हैं ॥
परमागम मंदिर अद्भूत है प्रभु महावीरकी मूरति है।
कुंदकुंद चरण अभिराम बने, पंच परमागम श्रुतमंदिरमें ॥
पंचमेरु नंदीश्वरधाम बना, भावि जिनवरजी बिराजित है।
आदिनाथ प्रभु अरु जिनवरवृंद, रत्नजड़ित वचनामृत हैं ॥
स्वाध्यायमंदिर बना अति सुंदर, जहाँ कहानगुरुने वास किया।
पैतालीस वर्षो तक जहाँ गुरुने, आतमका ही ध्यान किया ॥

अनुभवभीनी वाणी बरसी, मानो अमृत धारा बरसी।
गुरु--वचनामृतसे सारे जगमें, फैली आतमकी हरियाली ॥
प्रवचनमंडप सुविशाल अहा, गुरु प्रभावनाका स्मारक है।
पौराणिक चित्रावलि अंकित, पंच परमागम हरिगीत रचे ॥
प्रशममूर्ति मात भगवती, स्वानुभूतिविभूषित रत्न अहो।
ज्ञान वैराग्य भक्तिका संगम है, स्मृतिज्ञान अलौकिक मंगल है ॥
जयवंत रहो जयवंत रहो स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो।
तारणहारे गुरुदेवका यह स्वानुभूतितीर्थ जयवंत रहो ॥

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धर-स्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरुनन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावि तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावि श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार—इत्यादि सर्व वीतरागपदेभ्यः पूजनार्थे महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधर अर्घ

(राग–दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है।
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री धातकीविदेह-भाविजिनपूजा

(जोगीरासा)

धातकी खंड विदेहधाम बहु आनंदमंगळकारी,
ज्यां वर्षे तीर्थंकर प्रभुनो ध्वनि शाश्वत सुखकारी;
तत्र बिराजे त्रिभुवन तारक भाविना भगवंता,
अहो! पधार्या भरतभूमिमां करुणामूर्ति जिणंदा।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वानम्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्!

(राग : नंदीश्वर श्री जिनधाम)

क्षीरोदधिथी भरी नीर, कंचन कळश भरी,
प्रभु तव पद पूजुं जाय आवागमन टळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन साथ केसर घसी लाउं,
मम भव आताप नशाव, प्रभु तुज पाय पडुं;
अहो! ध्५३ातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रक्षालित अक्षत शुद्ध, कंचन थाल भरुं,
अक्षय पद प्राप्ति काज प्रभु पद पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ।

जासुद, चंपा, सुगुलाब, सुरभि थाळ भरुं,
मम कामबाण कर नाश, प्रभु तुज चरण धरुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

फेणी खाजा पकवान, मोदक भरी लावुं,
मम क्षुधारोग निरवार, प्रभु सन्मुख जाउं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पूजु मणिदीप हजूर, आतमज्योति जगे,
कर मोह तिमिरने दूर, भवनो भय भागे;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

लई अगर तगर कर्पूर दश विधि धूप करी,
प्रभु सन्मुख खेउं जाय कर्म कलंक बळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफळ सोपारी,
मागुं शिवफळ तत्काळ, प्रभुपद बलिहारी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–स्वर्णे वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरण-कमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(जिनेश्वर बसो हृदयके माँहि...)

भावि तीरथनाथकी जी महिमा अतुल महान,
सुर-नर-मुनि जिनके सदा जी, प्रणमें निशदिन पाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

द्वीप धातकी खंडमें जी, विदेहधाम सुख खान,
विचरे तीर्थंकर प्रभु जी, करते भवि कल्याण,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य दिवस घडी धन्य है जी, धन्य धन्य अवतार,
भावि जिनवर चरणमें जी, लाग्यो चित्त बडभाग,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

धन्य युगल पद होय तब जी, मैं पहुंचुं तुम पास,
धन्य हृदय हो ध्यानतें जी, ध्याऊं निज हित काज,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

दरश करत तव चरणके जी, चक्षु धन्य तब थाय,
सफल करणयुग होत तब जी, वचन सुने जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

पूज करूं तव चरणकी जी, करयुग धनि तब थाय,
शीस धन्य तब ही हुये जी, नमत चरण जिनराय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

मैं दुखिया संसारमें जी, तुम करुणानिधि देव,
हरे दुख यह मो तणो जी, करी हों तुम पद सेव,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

स्वरूप तिहारो हृदय विषे जी, धारूं मन वच काय,
भवसागरको भय मिट्यो जी, यातें त्रिभुवन राय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

भावि जिनवर चरणकी जी, भरी भक्ति उर मांहि,
निजस्वरूपमय कीजिये जी, भव संतति-मिट जाय,
जिनेश्वर बसो हृदयके मांहि...

ॐ ह्रीं श्री धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्‌देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये पूर्णार्घं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घावली

वीस विहरमान तीर्थंकरनो अर्घ

जल फल आठों दर्व, अरघ कर प्रीति धरी है,
गणधर इन्द्रनिहूतैं, थुति पूरी न करी है;
'द्यानत' सेवक जानके (हो), जगतैं लेहु निकार,
सीमंधर जिन आदि दे, (स्वामी) वीस विदेह मझार,
श्री जिनराज हो, भव तारणतरण जिहाज।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरादिविद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चोवीस जिनेन्द्रनो अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भव तरि मोक्ष वरों;
चौबीसौं श्री जिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्षमही।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाणक्षेत्रनो अर्घ

जल गंध अक्षत फूल चरु फल दीप धूपायन धरौं,
'द्यानत' करो निरभय जगततैं, जोर कर विनती करौं;
सम्मेद गढ गिरनार चंपा पावापुरि कैलासको,
पूजौं सदा चौबीस जिन निर्वाणभूमि निवासको।

ॐ ह्रीं ऋषभादिचतुर्विंशतितीर्थंकरनिर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति तीर्थंकरनो अर्घ

(नंदीश्वर श्री जिनधाम–राग)

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ, अरघ बनावत हैं,
वसु कर्म अनादि संयोग, ताहि नसावत हैं;

श्रीवासुपूज्य मलि नेम, पारस वीर अति,
नमूं मन-वच-तन धरि प्रेम, पांचों बाल यति।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरस्वामी पंच बालयति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु–जिनप्रतिमानो अर्घ

आठ दरवमय अर्घ बनाय, 'द्यानत' पूजों श्री जिनराय,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय;
पांचों मेरु अस्सी जिनधाम, सब प्रतिमाको करूं प्रणाम,
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।

ॐ ह्रीं पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनालयस्थ शाश्वत जिनप्रतिमाभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर–जिनप्रतिमानो अर्घ

यह अर्घ कियो निज हेत, तुमको अरपत हों,
'द्यानत' कीनों शिवखेत, भूमि समरपत हों;
नंदीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों,
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनंदभाव धरों।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालयस्थ शाश्वत जिनप्रतिमाभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ भगवानने अर्घ

अत्यंत निर्मल पूर्व आठों, द्रव्य अेकत्रित करो,
अरि अष्ट हनि गुण अष्ट संयुत, शीघ्र मुक्तिरमा वरो;
सौराष्ट्रदेशे स्वर्णपुर पावन सुमंगल ग्राम है,
प्रभु आदिनाथ जिनेश पूजों, मोक्षसुखके धाम है।

ॐ ह्रीँ श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभ भगवान

चिंतामणि सम शुद्धभाव, आठौं द्रव्य लिये;
पूजत अरिगण जु नसाव, निज गुण प्रगट किये।
श्री पद्मप्रभु भगवंत गुणातम शुद्ध सही,
तुम ध्यावत मुनिजन-संत पावत मोक्ष-मही।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रप्रभ भगवान

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो।
चंचल चितको रोकि चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिनाथ भगवान

आठ विधि सौं अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
तुम करहु भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवे।
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकें,
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकें।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ भगवान

जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुन, रतनथार भरिये सुखदान,
अष्टकर्मके नासक प्रभुको, पूजौं निज गुणदायक जान।
बालब्रह्मचारी जगतारी नेमीश्वर जिनराज महान,
मैं नित ध्यान धरूं प्रभु तेरा, मोकूं दीजो अविचल थान।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ भगवान

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये;
दीप धूप श्रीफलादि अर्घतैं जजीजिये।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूं सदा,
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर भगवान

जल फल वसु सजि हिमथार, तनमन मोद धरों;
गुण गाऊं भवदधि तार, पूजत पाप हरों।
श्री वीर महा अतिवीर, सन्मतिनायक हो,
जय वर्धमान गुणधीर, सन्मतिदायक हो।

ॐ ह्रीं श्री वर्द्धमानजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदकुंदाचार्यदेव

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक मुनिनकी पूजा करूं,
ता करे पातिक हरे सारे सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीं श्री कुंदकुंदादिमुनिराज चरणकमलपूजनार्थं अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी

जल चंदन अच्छत, फूल चरु चत, दीप धूप अति, फल लावें,
पूजाको ठानत, जो तुम जानत, सो नर द्यानत सुख पावें;
तीर्थंकरकी धुनि, गणधरने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई,
सो जिनवरवानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी, पूज्य भई।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं, सिद्ध पूजूं चावसों;
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भावसों।
अर्हन्त–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी;
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा;
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहिं कदा।
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं;
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा;
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेहके;
नामावली इक सहस वसु जय होय पति शिवगेहके।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु; देव-शास्त्र-गुरु; उत्तमक्षमादि दशधर्म; दर्शनविशुद्धिआदि षोडशभावना; त्रैलोक्यसंबंधि-कृत्रिम-अकृत्रिम समस्त चैत्य-चैत्यालय; पंचमेरु-संबंधि-चैत्य-चैत्यालय; नंदीश्वर-संबंधि-जिन-जिनालय; श्री कैलास-सम्मेदगिरि-गिरनारगिरि-चंपापुरी-पावापुरी आदि निर्वाणक्षेत्र; शत्रुंजय-गजपंथा आदि सिद्धक्षेत्र, अध्यात्म-साधनातीर्थ सुवर्णपुरी, श्रवणबेलगोला आदि अतिशयक्षेत्र; श्री ऋषभआदि चतुर्विंशति जिनेन्द्रदेव; श्री सीमंधर आदि विंशति जिनेन्द्रदेव; इत्यादि त्रिलोकवर्ती-त्रिकालवर्ती समस्त-पूज्यपदेभ्यो अनर्घ पदप्राप्तये महा अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत तीर्थधामनी आरती

(राग--आरती सीमंधरजी तुम्हारी)

आरती शाश्वत तीरथधामनी, सिद्धिवर्या ते जिनवरदेवनी,
अनंत तीर्थेशो आ भूमिमां विचर्या, अनंत जिवो अहिंथी मुक्ति पधार्या,
थाशे अनंता भावि भगवंता, ते शाश्वत तीर्थनी करीए वंदना.

सुरनरमुनिना नाथ पधार्या, दिव्यामृत विश्वे वरसाव्या,
अनंत गुणोना सागर उछळ्या, अपूर्व सिद्धि परिणतीने पाम्या.

शाश्वत मंगळ तीरथराज, धन्य बन्यो आ पर्वतराज,
पावन भगवंतोना चरणथी, पावन बन्युं सम्मेदशिखरजी.

जिन चोवीसी अनंतानंत, धन्य बनी भूमि धूळने धन्य,
गणधर मुनिवर श्रुतधर सहुए, आत्मलीन बनी पामे केवळ.

पंचमकाळे गुरुकहान पधार्या, शाश्वत तीर्थना दर्शन कराव्या,
महाभाग्ये मळ्यो अवसर आजे, शाश्वत तीर्थनी आरती उतारीए.

कैलास तीर्थनी आरती

(धन्य धन्य आज घडी--राग)

आरति उतारुं हुं तो आदिनाथदेवनी,
आदिनाथ दरबार देखा आदिनाथ दरबार है.

कैलाश पर्वतथी आदिनाथ प्रभुजी, मुक्ति पधारे मंगल तीर्थधाम छे (२)
भरतभूमिना आदि भगवान छे....आदिनाथ....

बोंतेर जिनवरना बिंब मनोहार छे, भरतराजे मणिरत्नना बनावीया (२)
मंगल आरती त्रय चोवीसीनी....आदिनाथ....

तीर्थवंदना श्री गुरुदेव साथे, अद्भुत मंगल आश्चर्यकार छे (२)
आरती उतारीए भक्तिवंदन करीए.....आदिनाथ.....

पावापुरी तीर्थनी आरती

(जय बावन देवा–राग)

जय महावीर देवा प्रभु, जय महावीर देवा,
आरति करूं तुम चरणे, भवजल नदी नावा....जयदेव०

इन्द्रों नरेन्द्रो उतरे गगनथी, चरणे शिर नमावे,
निर्वाण महोत्सव मंगलकारी, नमुं नमुं तीरथधाम....जयदेव०

पावापुरीथी मोक्ष पधार्या, महावीर भगवान,
भरतभूमिना अंतिम तीर्थंकर, नमुं नमुं तीरथधाम....जयदेव०

अपूर्व यात्रा गुरुवर साथे, आनंद अपरंपार,
वीरप्रभुना धाम निहाळ्या, वंदन अगणितवार....जयदेव०

बाहुबली आरती

(ॐ जय जिनवरदेवा–राग)

ॐ जय बाहुबली देवा स्वामी जय बाहुबली देवा (२)
देख्या देख्या ऋषभनंदनने, दर्शन मंगलकार....ॐ जय०

बार बार मास तपस्या करंता, उभा जंगलमांही,
वेलडीयुं वींटाणी देहे, निश्चल ध्यान धरनार....ॐ जय०

भरतचक्री मुनिदर्शने संचर्या, पूज्या बाहुबली पाद,
बाहुबलीजीए श्रेणी मांडी, पाम्या केवलज्ञान....ॐ जय०

महाभाग्ये गुरुदेवनी साथे, यात्रा करी मंगलकार,
गुरुजी प्रतापे आनंद वरसे, वरसे अमृतधार....ॐ जय०

नेमिनाथ भगवाननी आरती

(जय जय आरती शांति–राग)

आरती उतारूं हुं तो नेमिनाथनी, गिरिनगरनावासी जिनवरनी,

शिवादेवीना नंद पधार्या, गढ गिरनारने पावन कीधा,
राजपाट त्यागी, राजुलनार त्यागी, सहसावनमां संयम लीधां....आरती०

शुक्लध्याननी श्रेणीए चडिया, प्रभुजी पाम्या केवलज्ञान,
गिरनार गिरीए समोसर्ण रचायां, सुरनरमुनिना वृंद उतरिया....आरती०

दिव्यध्वनिनां धोध वरसिया, धन्य प्रसंग, धन्य जीवन बनतां,
परम वैराग्यनो आदर्श बतावतां, गुरुजी साथे मंगल यात्रा करतां....आरती०

ॐ जय जिनवरदेवा (आरती)

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ
दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि–सिद्धि–सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ
आज अमारे आंगण पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडघातकी–महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ
पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक–तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ ! आतमना आधार!.....ॐ
कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

शांतिपाठ

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन अेक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजे ।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांतिविधायक ।

दिव्य विटप पुहुपनकी वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगतपूज्य पूजौं शिर नाई;
परम शांति दीजे हम सबको, पढें तिन्हें पुनि चार संघको ।

(वसंततिलका)

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ।

(इन्द्रवजा)

संपूजकोंको प्रतिपालकोंको, यतीनको औ यतिनायकोंको;
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ।

(स्रग्धरा छंद)

होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा,
होवै वर्षा समै पै तिलभर न रहै व्याधियोंका अन्देशा;
होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रोंका हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगतीका,
सद्वृतों का सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका;
बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं,
तौलौं सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं।

(आर्या)

तव पद मेरे हियमें, मम हिय तेरे पुनीत चरणोंमें;
तबलौं लीन रहों प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति-पद मैंने।

अक्षर पद मात्रासे, दूषित जो कछु कहा गया मुझसे;
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भवदुःखसे।
हे जगबन्धु जिनेश्वर, पाऊं तव चरण शरण बलिहारी;
मरण–समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी।

।। परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

(अहीं नववार णमोकार मंत्रनो जाप जपवो.)

शान्तिपाठ

(वसंततिलकम्)

सीमंधरादिभवशान्तिकरा जिनेन्द्रा;
सर्वार्थसाधनगुणप्रणिधानरूपा;
तेभ्योऽर्पयामि भवकारणनाशबीजं,
पुष्पांजलि विमलमंगलकामरूपम्।

(पुष्पांजलिं)

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ।।१।।

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ।।२।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ।।३।।

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ।।४।।

सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ।।५।।

સહજ ચિદાનંદ.

શ્રી દિગંબર જૈન સ્વાધ્યાયમંદિર ટ્રસ્ટ, સોનગઢ - ૩૬૪૨૫૦

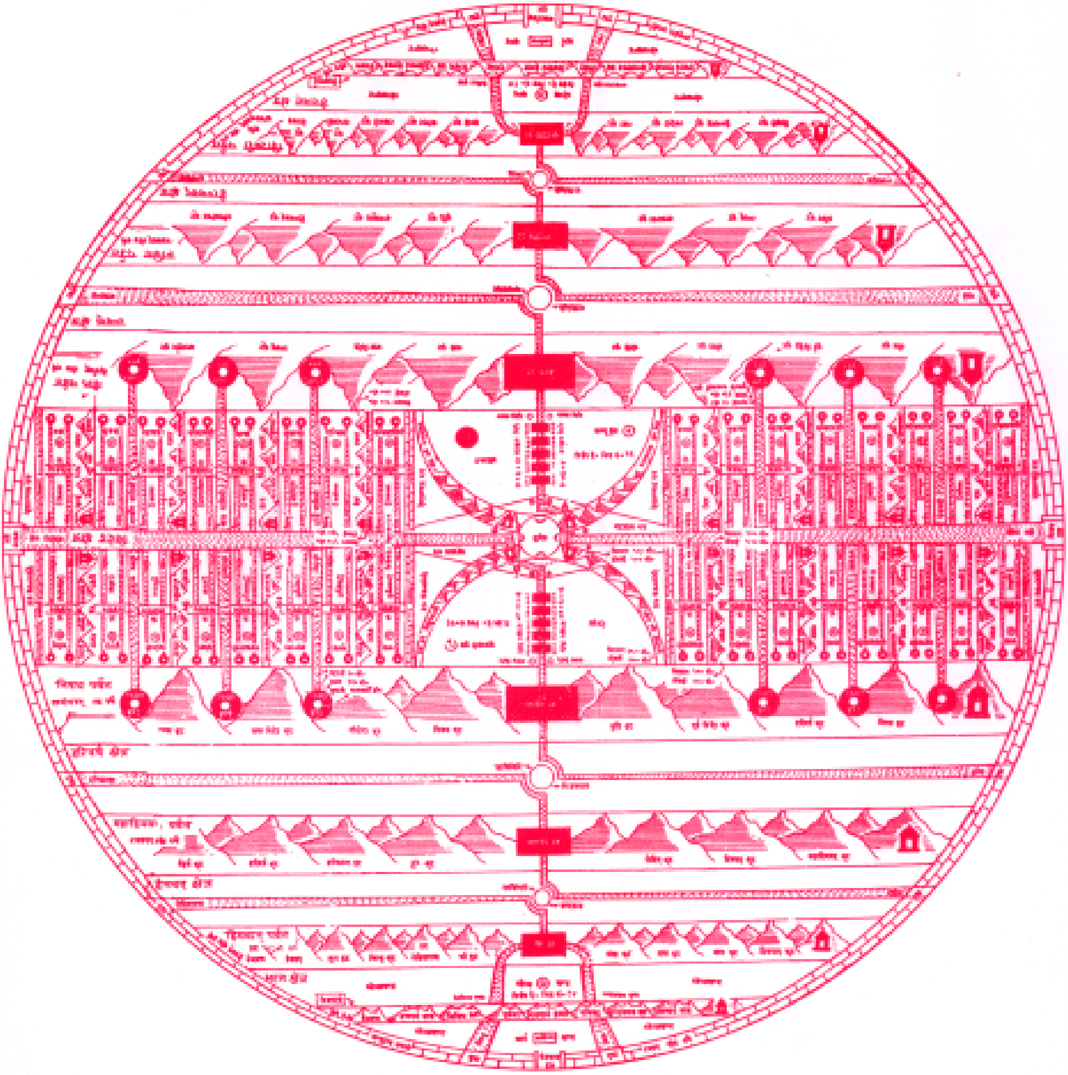

NAKASHO
TRANLOK

Shri Digambar Jain Swadhyay Mandir Trust, Songadh - 364250

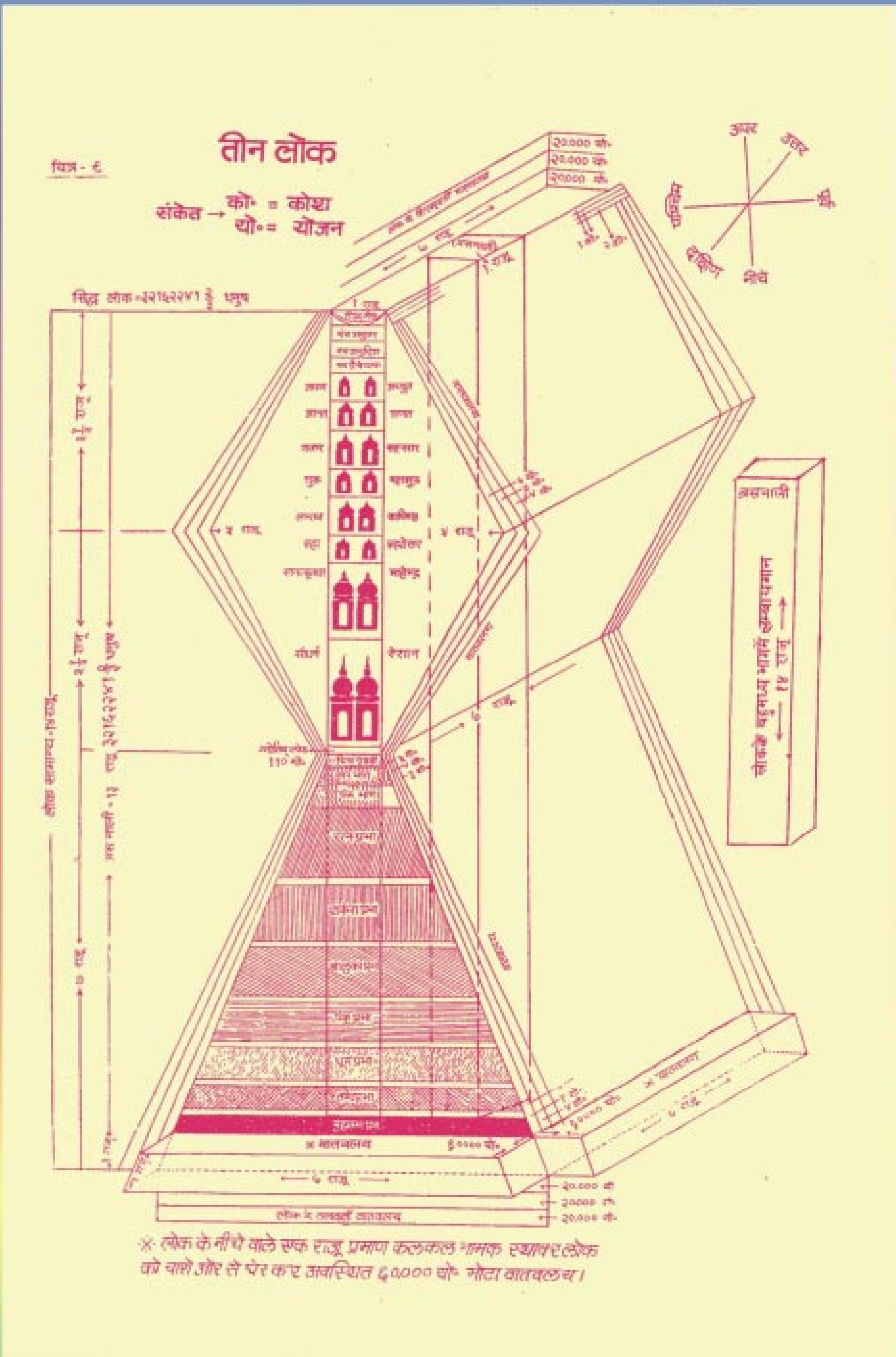

NAKASHO
TRANLOK